अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) पन्नवणा सूत्र में कर्मभोग के कारण बताये गए हैं-
(क) 103 (ख) 93
(ग) 85 (घ) 33 (ख)

(ii) 'शहद लगी तलवार' किस कर्म का दृष्टांत है-
(क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय
(ग) वेदनीय (घ) आयु (ग)

(iii) यह कर्म आत्मा के अनन्त सामर्थ्य गुण की घात करता है-
(क) आयु (ख) मोहनीय
(ग) अन्तराय (घ) गोत्र (ग)

(iv) असाता वेदनीय कर्म जीव कितने प्रकार से बांधता है-
(क) 8 (ख) 12
(ग) 10 (घ) 16 (ख)

(v) शुभ नाम कर्म बंधने का कारण नहीं है-
(क) मन की सरलता (ख) काया की सरलता
(ग) वचन की वक्रता (घ) विसंवाद रहितता (ग)

(vi) तीसरी नरक की आगति है-
(क) 19 (ख) 20
(ग) 46 (घ) 16 (क)

(vii) दूसरे देवलोक की आगति है-
(क) 23 (ख) 40
(ग) 46 (घ) 16 (ख)

(viii) मिश्र दृष्टि की आगति है-
(क) 363 की (ख) 371 की
(ग) 563 की (घ) 535 की (क)

(ix) तेऊकाय के जीव आयुष्य पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न होते हैं-
(क) मनुष्य गति में (ख) तिर्यंच गति में
(ग) देवगति में (घ) नरक गति में (ख)

(x) तेरहवें गुणस्थान में कितने योग होते हैं-
(क) 1 (ख) 4
(ग) 7 (घ) 2 (ग)

(xi) मतिज्ञान के भेद होते हैं-
(क) 4 (ख) 61
(ग) 6 (घ) 1 (क)

(xii) सुनार, किसान आदि किस बुद्धि के उदाहरण है-
(क) वैनयिकी बुद्धि (ख) औत्पातिकी बुद्धि
(ग) कार्मिकी बुद्धि (घ) पारिणामिकी बुद्धि (ग)

(xiii) उपयोग का दसवाँ भेद है-
(क) चक्षुदर्शनोपयोग (ख) अचक्षुदर्शनोपयोग
(ग) मतिज्ञानोपयोग (घ) केवलदर्शनोपयोग (ख)

(xiv) 5 उपयोग लेकर आते हैं, 5 उपयोग लेकर निकलते हैं-
(क) वाणव्यन्तर (ख) पाँच अनुत्तर विमान
(ग) पहला देवलोक (घ) भवनपति (ख)

(xv) सातवीं नारकी में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं-
(क) 5 (ख) 8
(ग) 4 (घ) 12 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त होती है। (हाँ)

(ii) गूढ़ माया करने से तिर्यंच आयु का बंध होता है। (हाँ)

(iii) मोहनीय कर्म 28 प्रकार से बंधता है। (हाँ)

(iv) गोत्र कर्म की दो प्रकृतियाँ हैं। (हाँ)

(v) कीलक एक संस्थान है। (नहीं)

(vi) मनुष्य गति के 303 भेद हैं। (हाँ)

(vii) समुच्चय जीव की आगति 371 की होती है। (हाँ)

(viii) परमाधामी देवों के 10 भेद हैं। (नहीं)

(ix) वासुदेव की आगति 32 की होती है। (हाँ)

(x) पहले गुणस्थान में 14 योग पाये जाते हैं। (नहीं)

(xi) अरूपी के 61 भेद हैं। (हाँ)

(xii) संसार के सभी पुद्गल जो हमें दृष्टिगोचर होते हैं, वे अष्टस्पर्शी होते हैं। (हाँ)

(xiii) 'विभंग ज्ञानोपयोग' उपयोग का आठवाँ भेद है। (हाँ)

(xiv) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर आते हैं। (हाँ)

(xv) उपयोग के थोकड़े का वर्णन श्री भगवती सूत्र के 13वें शतक में किया गया है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	कषाय मोहनीय	(क) नो कषाय	16
(ii)	समचतुरस्र	(ख) 16	संस्थान
(iii)	जुगुप्सा	(ग) स्थावर दशक	नो कषाय
(iv)	अनादेय	(घ) संस्थान	स्थावर दशक
(v)	स्त्यानगृद्धि	(च) 9	दर्शनावरणीय
(vi)	लौकान्तिक देव	(छ) 42	9
(vii)	भुजपरिसर्प की गति	(ज) दर्शनावरणीय	517
(viii)	गुणस्थान	(झ) 15	14
(ix)	परमाधार्मिक देव	(य) 517	15
(x)	श्रावक की गति	(र) 14	42

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरे प्रभाव से जीव ऊँच-नीच कुलों में उत्पन्न होता है।	गोत्र कर्म
(ii)	मैं कषाय का एक भेद हूँ, जो सम्यक्त्व नहीं आने देता।	अनन्तानुबंधी कषाय
(iii)	मेरी 93 अथवा 103 प्रकृतियाँ हैं।	नाम कर्म
(iv)	मैं ऐसा कर्म हूँ, जो मार-पीट करने से बंधता हूँ।	असाता वेदनीय कर्म
(v)	मेरा अबाधाकाल 7 हजार वर्ष का है।	मोहनीय कर्म
(vi)	जीव जिस गति से आकर उत्पन्न होता है, उसे कहते हैं।	आगति
(vii)	मेरी आगति 16 की एवं गति 40 की है।	छठी नरक

(viii) मेरी आगति 82 की एवं गति 14 की है। चक्रवर्ती

(ix) मेरी गति अमर है। बलदेव/मिश्रदृष्टि

(x) मैं नारकी का ऐसा भेद हूँ, जिसे पूर्णकर जीव सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ही उत्पन्न होते हैं। सातवीं नरक

(xi) हम ऐसे मनुष्य हैं, जो अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। सम्मूर्च्छिम मनुष्य

(xii) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें एक भी योग नहीं पाया जाता है। अयोगी केवली गुणस्थान

(xiii) मैं गुणस्थान का ऐसा भेद हूँ जिसमें किसी भी लब्धि का प्रयोग नहीं होता। मिश्र गुणस्थान/सात से बारह गुणस्थान

(xiv) मैं जमे हुए कठोर पानी की तरह हूँ। घनोदधि

(xv) मैं उपयोग का ग्यारहवाँ भेद हूँ। अवधिदर्शनोपयोग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) कौनसे कर्मों के क्षय से अनन्त ज्ञान गुण तथा अटल अवगाहना गुण प्रकट होता है ?

1. ज्ञानावरणीय के क्षय से अनन्त ज्ञान, 2. आयुकर्म के क्षय से- अटल अवगाहना।

(ii) कर्म किसे कहते हैं ?

कषाय और योग के निमित्त से आत्मा के साथ लगे हुए दूध पानी की तरह एकमेक हुए कार्मण-पुद्गलों को 'कर्म' कहते हैं।

(iii) स्पर्श के आठ भेदों के नाम क्रमशः लिखिए।

स्पर्श के भेद- ठण्डा, गर्म, रूक्ष (लुखा), स्निग्ध (चिकना), खुरदरा, कोमल, हल्का और भारी।

(iv) अन्तराय कर्म की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति तथा अबाधाकाल लिखिए।

अन्तराय कर्म	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति	अबाधाकाल
	अन्तर्मुहूर्त	30 कोड़ाकोड़ी सागरोपम	3 हजार वर्ष

(v) तीर्थंकर की आगति एवं गति लिखिए।

आगति 38 की- (35 वैमानिक देवता (3 किल्विषी को छोड़कर) और पहली से तीसरी नरक, इन सबके पर्याप्त।

गति- मोक्ष की

(vi) वासुदेव की आगति लिखिए।

आगति 32 की- (35 वैमानिक में से 5 अनुत्तर विमान को छोड़कर 30 वैमानिक देवता एवं पहली, दूसरी नरक, इनके पर्याप्त।

(vii) 30 अकर्मभूमिज के भेद लिखिए।

5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हेमवत, 5 ऐरण्यवत।

(viii) पहले गुणस्थान में कौन-कौन सी लेश्याएँ होती हैं?

कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म और शुक्ल ये छहों लेश्याएँ पहले गुणस्थान में होती हैं।

(ix) बुद्धि के चार भेदों के नाम लिखिए।

1. औत्पातिकी 2. वैनयिकी 3. कार्मिकी 4. पारिणामिकी।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3 = (27)

(i) त्रस दशक के नाम क्रम से लिखिए।

त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशःकीर्तिनाम

(ii) मोहनीय कर्म के बंध के 6 कारण लिखिए।

1. तीव्र क्रोध करने से, 2. तीव्र मान करने से, 3. तीव्र माया करने से

4. तीव्र लोभ करने से, 5. तीव्र दर्शन मोहनीय से, 6. तीव्र चारित्र मोहनीय से।

(iii) संहनन के 6 भेदों के नाम क्रमशः लिखिए।

1. वज्रऋषभनाराच 2. ऋषभनाराच 3. नाराच

4. अर्द्धनाराच 5. कीलक 6. सेवार्त संहनन

(iv) मोहनीय कर्म किसे कहते हैं तथा यह किस गुण की घात करता है?

जिससे आत्मा मोहित हो जाये, उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। यह कर्म आत्मा के क्षायिक समकित तथा अनंत वीतरागता नामक गुण की घात करता है।

(v) तिर्यंच गति के 48 भेदों का उल्लेख कीजिए।

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय और वायुकाय के प्रत्येक सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्त और पर्याप्त, ये चार-चार भेद होने से 4X4=16 भेद।

वनस्पतिकाय के सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक, इन तीन के अपर्याप्त और पर्याप्त ये 6 भेद हुए। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय के अपर्याप्त-पर्याप्त के भेद, ये कुल 6 भेद।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय के-जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प, इन पाँच भेदों के सन्नी, असन्नी, पर्याप्त और अपर्याप्त = 20।

इस प्रकार 16+6+6+20 = 48 भेद होते हैं।

(vi) केवली की आगति को समझाइए।

आगति-108 की- (15 परमाधार्मिक एवं 3 किल्विषी को छोड़कर 81 जाति के देवता, 15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय और पहली से चौथी नरक, इस तरह 81+15+5+3+4 = 108

(vii) तीसरे गुणस्थान में योग व उपयोग के भेद लिखिए।

तीसरे गुणस्थान में 4 मन के, 4 वचन के तथा औदारिक व वैक्रिय काययोग, ये 10 योग पाये जाते हैं। तथा 3 अज्ञान व 3 दर्शन ये 6 उपयोग होते हैं।

(viii) अष्टस्पर्शी रूपी के 15 भेदों को समझाइए।

छह द्रव्य लेश्या, चार शरीर (औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस), घनोदधि, घनवाय, तनुवाय, काययोग, बादर पुद्गलास्तिकाय का स्कन्ध (उसमें द्वीप, समुद्र, नरक पृथ्वियाँ, विमान और सिद्धशिला सम्मिलित ह) ये 15 भेद अष्टस्पर्शी रूप के हैं।

(ix) मनुष्य में जीव कौन-कौनसे उपयोग लेकर आते हैं तथा कौन-कौनसे उपयोग लेकर निकलते हैं ?

मनुष्य में जीव 7 उपयोग लेकर जाते हैं (3 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन-अचक्षु व अवधि दर्शन) 8 उपयोग लेकर निकलते हैं। (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन-अचक्षु, अवधि दर्शन)